ORIGINAL RESEARCH PAPER

Geography

VAN SANSADHAN EVAM SANRAKSHAN (BHARAT KE SANDHARBH ME)

KEY WORDS:

डॉ0 अर्चना भदौरिया अतिथि विद्वान भूगोल शासकीय महा विद्यालय, ढोढर जिला– श्योपुर (म0प्र0)

मनुष्य नें प्रारंभ से ही प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित किया है। प्रकृति ने उसे भोजन आवास जल उपलब्ध कराया है। इस संबंध में प्रकृति एक सहचर के रूप में प्रतिक्षण उसके साथ रही इस संबंध में कुमारी सेम्पुल ने अपनी पुस्तक '' भौगोलिक वातावरण के प्रभाव '' में मानव को भूतल की उपज बताया है। इसका अभिप्राय केवल इतना नहीं है कि मनुष्य पृथ्वी का बच्चा है, और उसकी धूल का कण है, वरन यह भी है कि पृथ्वी माता ने उसका पालन पोषण किया है..... वह उसकी हड्डी मांस में तथा उसके मस्तिष्क और आत्मा में प्रवेश कर गई है।

इससे स्पष्ट है कि प्रकृति हमारे लिए वंदनीय है। भारतीय इतिहास में तो वनों का अतीत से ही बडा महत्व रहा है। चाहे वह सांकृतिक हो या आर्थिक। ऋषि मुनि वनों में तपस्या किया करते थे और मानव कल्याण की कामना करते थे हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी वनों का महत्व बताया गया है। मत्स्य पुराण, रामायण, महाभारत में वनों का महत्व सर्वविदित है। रामायण में अरण्य काण्ड में पूरा एक भाग वनों को समर्पित है ठीक उसी प्रकार पाण्डवों ने अपना निर्वासित समय वनों में काटा। नन्दन वन, दण्डकारण्य, अशोक वाटिका, वृन्दावन आदि एसे वन हैं जहां भारतीय इतिहास की कई घटनाएं हुई। प्रकृति ने वनों के रूप में भारत को कई अमूल्य उपहार प्रदान किए हैं और हमारे देश में कई वृक्षों की पूजा होती है। लेकिन भौतिकवादी संस्कृति में मनुष्य वृक्षों के महत्व को भूल गया और उसने उनका दोहन शुरू कर दिया सबसे अधिक वन उपनिवेशकाल के दौरान काटे गये। इसके अतिरिक्त तीव्र ओद्योगीकरण बढती जनसंख्या की आवश्यकता के लिए होनेवाली भोजन की कमी आदि को पूरा करने के लिए वनों की कटाई आरंभ कर दी गई।

''प्राकृतिक वनस्पति या वनों से आशय उस पौधा समुदाय से है जो प्रकृति में बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के उगता है और इसकी विभिन्न प्रजातियां वहां पाई जाने वाली मिट्टी और जलवायु परिस्थितियों में यथासंभव अपने को ढाल लेती है।

वन शब्द से आशय पेड–पौधों के विशाल समूह से होता है। मानव के लिए घास व झाडियों की अपेक्षा वनों का अधिक महत्व होता है। हमारे देश में वनों की कई प्रजातियां पाई जाती हैं देश के विकास में वनों का महत्वपूर्ण स्थान है। वनों हमें अनेक उद्योगों के लिए कच्चा माल उपलब्ध करवातें हैं। पर्यावरण व पारिस्थितिकी संतुलन में इनका योगदान महत्वपूर्ण है। भारत अत्यधिक विविधतापूर्ण जलवायु एवं मृदा का देश है इसलिए यहां उष्णकटिबंधीय वनों से लेकर टुड्रा प्रदेश तक की प्राकृतिक वनस्पतियां पाई जाती हैं। हिमालय पर्वतों पर शीतोष्ण कटिबंधिय वनस्पतियां उगती हैं। पश्चिमी घाट तथा अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में उष्ण कटिबंधिय वर्षा वन पाये जाते हैं। डेल्टाई क्षेत्रों मे उष्णकटिबंधिय वन व मैंग्रोव तथा राजस्थान के मरूस्थलीय और अर्द्ध मरूस्थलीय क्षेत्रों में कई प्रकार की झाडियां, और कैक्टस और कांटेदार वनस्पतियां मिलती हैं।

वनों के प्रकार –
वनों के प्रकार को निर्धारित करने में कई भौगोलिक कारकों का योगदान रहता है जिनमें वर्षा, तापमान, आद्रता, मिट्टी समुद्र तल से उंचाई तथा भूगर्भिक संरचना महत्वपूर्ण है।

वर्षा जल की प्राप्ति तथा तापमान के आधार पर भारतीय वनों को दो भागों में बांटा जा सकता है–

- क्षैतिज वितरण या वर्षा के आधार पर वितरण
- उर्ध्वाधर वितरण या तापमान के आधार पर वितरण

क्षैतिज वितरण– जैसे जैसे वर्षा की मात्रा में कमी आती है तो वनस्पति की सघनता में भी कमी आ जाती है। भारत में औसत से अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में सदाबहार वन पाए जाते हैं तथा औसत से कम वर्षा वाले क्षेत्रों मे उष्ण कटिबंधिय वन पाये जाते हैं।

1. ऊष्णकटिबंधीय सदाबहार वन–
इस प्रकार के वन भारत के अत्यधिक आद्र तथा ऊष्ण भागों में पाए जाते हैं। जहाँ औसत तापमान 22 डिग्री से तथा वर्षा 250 सेमी या अधिक होती है। अतः यहाँ एसे वृक्ष उगते हैं जो साल भर हरे–भरे रहते हैं। इस कारण इन्हें सदाबहार वन कहते हैं। इन वृक्षों की लम्बाई 60 मी0 या उससे अधिक हो सकती है। विषुवतरेखीय वनों की भांति इनमें भी सूर्य का प्रकाश भूमी तक कठिनाई तक पहुँच पाता है। इन वनों के महत्वपूर्ण वृक्ष रबड, महोगनी, एबोनी, नारियल, बाँस, बेंत, तथा आयरनवुड हैं। ये वन मुख्यतः अंडमान निकोबार द्वीप समूह, असम, मेघालय, नागालैण्ड, मणिपुर, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पश्चिमी घाट की पश्चिमी ढालों एवं पश्चिमी तटीय मैदान पर पाए जाते हैं। इस प्रकार के वन 45 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में हैं। सदाबहार वन असम, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर, अण्डमान, निकोबार द्वीप समूह, पश्चिमी ढाल, हिमालय की तराई तथा कर्नाटक के पश्चिमी भागों में मिलती हैं।

2. अर्द्ध सदाबहार वन– इस प्रकार की वनस्पति का विकास 200 से.मी. से 250 से.मी. तक वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में होता है। भारत में अर्द्ध सदाबहार वनस्पतियां अंडमान निकोबार सहयाद्रि एवं मेघालय पठार के आस–पास के क्षेत्रों में पाई जाती है इनमें साइडर, होलक, कैल गुरजन, लॉरेल चंपा रोजवुड प्रमुख वृक्ष हैं।

3. ऊष्णकटिबंधिय पर्णपाती अथवा मानसून वन– मानसूनी जलवायु के प्रभाव के कारण इन्हें मानसूनी वन भी कहते हैं। इन वनों के विकास के लिए 100 से.मी. से 200 से.मी. तक वर्षा उपयुक्त होती है। वाणिज्यिक द्रष्टि से इन वनों का महत्व अधिक होता है। ये वन हिमालय की श्रेणी में शिवालिक के गिरिपद, भाबर, एवं बिहार, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, कर्नाटक, उडीसा आदि क्षेत्रों में पाए जाते हैं। यहाँ मुख्य रुप से साल, सांगवान, शीशम, बेंत, चंदन, आँवला, शहतूत, महुआ आदि के वृक्ष मिलते हैं।

4. शुष्क पर्णपाती वन– इन वनस्पतियों का विकास उन क्षेत्रों में होता है जहाँ वार्षिक वर्षा 70 सेमी से 100 सेमी तक होती है। ये वन देश के उत्तर पश्चिम भाग में दक्षिण में सौराष्ट्र से लेकर उत्तर में पँजाब के मैदानी भागों तक विस्तृत है ये वन भारत के सर्वाधिक वृहत क्षेत्र में विस्तृत है तेंदू, बेल, खैर आदि यहाँ के प्रमुख वृक्ष है। कत्था बनाने के लिए खैर वृक्ष की लकडी का प्रयोग होता है तथा तेंदू वृक्ष के पत्ते से बीडी बनाई जाती हैं।

5. शुष्क कटीली वन– यहाँ वार्षिक वर्षा 70 से.मी. से कम होती है तथा निम्न किस्म की घासभूमियाँ पाई जाती हैं। इसके अंतर्गत भारत के उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ का कुछ क्षेत्र एवं पश्चिम घाट के वृष्टि छाया प्रदेश जैसे पश्चिमी आंध्र प्रदेश, तेलगांना, कर्नाटक के कुछ क्षेत्र शामिल हैं। प्रमुख वृक्ष– बबूल, नागफनी खजूर, खेजडी आदि हैं।

6. सवाना वन– सामान्यतः 60 सेमी से कम वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में यह वनस्पति पाई जाती है। इन प्रदेशों की उर्वरता कम होने के कारण इन्हें बंजर प्रदेश कहा जाता है। महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश राज्योंके कुछ भागों में ये प्रदेश उपस्थित है।

7. मरूस्थलीय वन– ये वन उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 50 सेमी से कम होती है। यहाँ पाए जाने वाले वृक्षों की पत्तियां प्रायः छोटी तथा मोटी छाल युक्त होती हैं। जिससे वास्पीकरण कम से कम हो। इस प्रकार के वन दक्षिण–पश्चिम पंजाब हरियाणा राजस्थान गुजरात व उत्तर प्रदेश के अर्द्धशुष्क भागों में पाए जाते है।

8. ज्वारीय वन– भारत में ज्वारीय वनस्पति मुख्य रुप से गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, गोदावरी तथा कृष्णा नदी के डेल्टाई क्षेत्रों में अंडमान निकोबार तथा कच्छ क्षेत्र में पाई जाती है।

ऊर्ध्वाधर वितरण–
समुद्र जलस्तर से 900 मीटर की ऊँचाई के बाद भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले वनों को वर्षा की अपेक्षा तापमान अधिक प्रभावित करता है। इसलिए ऊँचाई में तापमान में कमी आने से प्राकृतिक वनस्पति कमशः ऊष्ण कटिबंधीय, समशीतोष्ण, शंकुधारी और टुंड्रा वन के रूप में पाए जाते हैं।

तापमान के आधार पर वन दो प्रकार के होते है।
1. प्रायद्वीपीय भारत के पर्वतीय क्षेत्र की प्राकृतिक वनस्पति
2. हिमालय की प्राकृतिक वनस्पति

राष्ट्रीय वन नीति–

भारत में सबसे पहले ब्रिटिश सरकार ने 1894 में एक वन नीति अपनाई जिसके अनुसार वनों के देख–रेख के लिए विकास समिति तथा हर प्रान्त में वन विभागों की स्थापना की गई। स्वतंत्रता के बाद एक नई वन नीति बनाई गई। सरकार ने सर्वप्रथम 1950 में एक केन्द्रीय वन बोर्ड की सथापना की गई। इस बोर्ड की सिफारिशों के आधार पर 1952 को केन्द्रीय सरकार ने वनों के समबन्ध में एक नवीन नीति की घोषणा की। जिसके प्रस्ताव में यह स्वीकार किया गया कि " वन अब कृषि के दास मात्र नहीं हैं, बल्कि वे कृषि के अपरिहार्य मित्र एवं उपमाता के समान हैं। कृषि भूमियों की उत्पादकता को बनाए रखने एवं उसे बढाने के लिए वन नितांत आवश्यक हैं।" इस वन नीति की चार मुख्य बातें थीं:

1. वनों के अन्तर्गत क्षेत्रफल को बढाना
2. वनों को लगाना
3. वनों को सुरक्षित करना
4. वनों के सम्बन्ध में अनुसंधान करना

आगे चलकर 1988 में राष्ट्रीय वन नीति में संशोधन किया गया और उसमें कुछ

विस्तार किया गया जैसे– समस्त भौगोलिक क्षेत्र के एक तिहाई क्षेत्र पर वनावरण, सामाजिक वानिकी कार्यक्रम को बढावा देते हुए वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करना, पारिस्थितिकी संतुलन को कायम रखना, वन उत्पादों के कुशलतम उपयोग पर बल देना।

मार्च 2018 को केन्द्रीय पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने राष्ट्रीय वन नीति 2018 का मसौदा जारी किया।

नई राष्ट्रीय वन नीति 2018 वर्ष 1988 में जारी वन नीति का स्थान लेगी। मसौदा नीति में भी कुल भौगोलिक क्षेत्र के एक तिहाई हिस्से पर और पहाडी एवं पर्वतीय क्षेत्रों में दो तिहाई क्षेत्रों पर वनाच्छादन का राष्ट्रीय लक्ष्य निर्धारित किया गया। इसमें जंगल के बाहर के इलाकों में वन आवरण को दोगुना करने की बात की गई है नीति में 'वुड इज गुड' यानी लकडी बेहतर विकल्प है के नाम से जागरूकता अभियान चलाने की सिफारिश की गई है। राष्ट्रीय वन नीति 2018 में इको टूरिज्म को संतुलित रुप से आगे बढाने पर जोर दिया जा रहा है।

सरकार ने वन नीति के अन्तर्गत वन विकास के लिए निम्न कार्य किए है।

1. *केन्द्रीय वन आयोग की स्थापना– केन्द्रीय सरकार ने 1965 में केन्द्रीय वन आयोग की स्थापनाकी इसका कार्य आँकडे व सूचनाएं एकत्रित करना है।*
2. *भारतीय वन सर्वेक्षण संगठन–वनों में उपलब्ध वस्तुओं का पता लगाने के लिए जून 1971 में इस संगठन को स्थापित किया गया है।*
3. *वन अनुसंधान संस्थान की स्थापना– देहरादून में 1906 वन अनुसंधान संस्थान स्थापित किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य वनों से प्राप्त वस्तुओं के सम्बन्ध में अनुसंधान करना एवं वनों के सम्बन्ध में शिक्षा देना है।*
4. *राज्य वन विकास निगमों की स्थापना– राज्यों के द्वारा वनों को ठेके पर उठाया जाता है और फिर ठेकेदार वनों से लकडी काटते हैं। इस प्रथा को समाप्त करने के लिए वाणिज्यिक वन विकास निगम बनाए गए हैं। अब तक इन्हें 22 राज्यों में बनाया गया है।*
5. *वन महोत्सव– कृषि मंत्री के.एम. मुंशी ने 1950 में अधिक वृक्ष लगाओ आंदोलन चलाया गया जिसका नाम 'अधिक वृक्ष लगाओ आंदोलन' चलाया गया जिसका नाम 'वन महोत्सव' रखा गया। प्रति वर्ष पूरे देश में 1 जुलाई से 7 जुलाई तक वन महोत्सव कार्यक्रम मनाया जाता है।*

वन संसाधन रिर्पोट 2019–

- *भारत में वनों की स्थिति पर केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के भारतीय वन सर्वेक्षण की द्विवार्षिक 16 वीं वन स्थिति रिर्पोट 2019,30 दिसम्बर 2019 को जारी हुई इस रिर्पोट के अनुसार (सन्दर्भ वर्ष 2017) देश में कुल वनाच्छादित क्षेत्र 712249 वर्ग कि.मी. है अर्थात कुल भू–भाग 21.67: है। दो वर्ष पूर्व अर्थात 2017 में यह 708273 (21.54 प्रतिशत) वर्ग कि.मी. या इस प्रकार इन दो वर्षों में वन क्षेत्र 3976 वर्ग कि.मी. (0.56 प्रतिशत) की वृद्धि हुई है।*

भारतीय वन सर्वेक्षण द्वारा वन रिर्पोट प्रत्येक दो वर्षों में 1987 से प्रकाशित की जा रही है। यह इस श्रेणी की 16वीं रिर्पोट है जिसके प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं।

- *इस रिर्पोट में वन एवं वन संसाधनों के आंकलन के लिए भारतीय दूर संवेदी उपग्रह रिर्सोस सैट–II से प्राप्त आंकडों का उपयोग किया गया है।*
- *इस रिर्पोट में वन एवं वन संसाधनों के आंकलन हेतु पूरे देश में 2200 से अधिक स्थानों से प्राप्त आंकडों का प्रयोग किया गया है।*
- *इस रिर्पोट में वनों प्रकार एवं जैव विविधता नामक एक नया अध्याय जोडा गया। इसके अंतर्गत वृक्षों की प्रजातियों को 16 मुख्य वर्गों में विभाजित करके उनका चैंपियन एवं सेठ वर्गीकरण (1968) के आधार पर आंकलन किया गया*
- *संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन द्वारा प्रत्येक पाँच वर्ष पर कराए जाने वाले वैश्विक वन संसाधन आंकलन के अनुसार भारत में वैश्विक वन क्षेत्रफल का 2 प्रतिशत मौजूद है और भारत वन क्षेत्र के मामले में शीर्ष दस देशों में शामिल है।*
- *रिर्पोट में फॉरेस्ट कवर को मोटे तौर पर 4 वर्गों में बाँटा गया है। बहुत घने जंगल, मध्यम घने जंगल, खुले जंगल और मैंग्रोव।*
- *रिर्पोट के ताजा आंकलन के अनुसार देश के 17 राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों का 33 प्रतिशत से अधिक भू–भाग वनों से घिरा है।*
- *इनमें से 7 राज्यों और संघशासित प्रदेशों जैसे मिजोरम, लक्ष्यद्वीप, अंडमान–निकोबार द्वीप समूह, अरूणाचल प्रदेश, नागालैण्ड। मेघालय और मणिपुर का 75 प्रतिशत से अधिक भू–भाग वनाच्छादित है।*

ISFR *2019 से संबंधित प्रमुख तथ्य*

देश में वनों एवं वृक्षों से आच्छादित कुल	807276 वर्ग कि.मी. (कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 24.56 प्रतिशत)
कुल भौगोलिक क्षेत्र में वनों का हिस्सा	712249 वर्ग कि.मी. (21.67 प्रतिशत)
कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में वृक्षावरण क्षेत्र	95027 वर्ग कि.मी. (2.89 प्रतिशत)
वनों से आच्छादित क्षेत्रफल में वृद्धि (ISFR 2017 की तुलना में)	3976 वर्ग कि.मी. (0.56 प्रतिशत)
वृक्षों से आच्छादितृ क्षेत्रफल में कुल वृद्धि (ISFR 2017 की तुलना में)	1212 वर्ग कि.मी. (1.29 प्रतिशत)
वनावरण से अच्छादित क्षेत्रफल में वृद्धि (ISFR 2017 की तुलना में)	5188 वर्ग कि.मी.(0.65 प्रतिशत)

स्रोत– ISFR 2019

- इस रिर्पोट के अनुसार भारत के रिकॉडेड फॉरेस्ट एरिया (RFA में 330 वर्ग कि. मी. की कमी आयी है)।
- रिर्पोट के अनुसार भारत के जन जातीय जिलों में कुल वनावरण क्षेत्र 422351 वर्ग कि.मी. है जो कि इन जिलों के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 37.54 प्रतिशत।

वनों की स्थिति पर राज्यवार आँकडे

प्रतिशत के संदर्भ में सर्वाधिक वनावरण वाले राज्य

लक्ष्यद्वीप	90.33 प्रतिशत
मिजोरम	85.41 प्रतिशत
अंडमान निकोबार द्वीप समूह	81.74 प्रतिशत

सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाले राज्य (वर्ग कि.मी.)

मध्य प्रदेश	77,482 वर्ग कि.मी.
अरूणाचल प्रदेश	66,688 वर्ग कि.मी.
छत्तीस गढ	55,611 वर्ग कि.मी.

वन क्षेत्रफल में वृद्धि वाले शीर्ष राज्य

कर्नाटक	1025 वर्ग कि.मी.
आंध्र प्रदेश	990 वर्ग कि.मी.
केरल	823 वर्ग कि.मी.

स्रोत– ISFR 2019

- *वर्तमान आंकलन के अनुसार देश के वन क्षेत्र का कुल कार्बन स्टॉक लगभग 7124.6 मिलियन टन अनुमानित है जो वर्ष 2017 के आंकलन की तुलना में लगभग 42.6 मिलियन टन अधिक है।*
- ISFR *2019 के अनुसार भारत में मैंग्रोव आवरण 4975 वर्ग कि.मी. है।*
- ISFR *2017 की तुलना में मैंग्रोव आवरण में 54 वर्ग कि.मी. की वृद्धि हुई है।*
- ISFR *2019 के अनुसार मैंग्रोव आवरण में वृद्धि दर्शाने वाले राज्य हैं गुजरात≥ उडीसा≥ महाराष्ट्र*

वन संरक्षण नीति के अंतगर्त उठाये गये कदम–

- *सामाजिक वानिकी– सामाजिक वानिकी से आशय है कि, पर्यावरणीय, सामाजिक एवं ग्रामीण विकास में मदद के उद्देश्य से वनों का प्रबंधन एवं सुरक्षा तथा वनारोपण।*
  पेड लगाने को प्रोत्साहित करने वाला यह कार्यक्रम 1976 ई. से ही चल रहा वनारोपण को जन आंदोलन बनाना इस नीति का लक्ष्य है। राष्ट्रीय कृषि आयोग (1976–79) ने सामाजिक वानिकी को तीन वर्गों में बाँटा है (1.) शहरी वानिकी (2.) ग्रामीण वानिकी (3.) कृषि वानिकी
- *शहरी वानिकी– शहरों और उसके इर्द–गिर्द निजी एवं सार्वजनिक भूमि जैसे– हरित पट्टी, पार्क, सडकों के साथ जगहों के औद्योगिक व व्यापारिक स्थलों पर वन विभाग द्वारा तेजी से बढने वाले पौधों को लगाना और उनका प्रबंधन शहरी वानिकी के अंतगर्त आता है।*
- *ग्रामीण या सामुदायिक वानिकी– गाँवों की सामूहिक उपयोग वाली सार्वजनिक भूमियों पर जनसमूहों द्वारा वृक्षारोपण को बढावा देना यह सामाजिक वानिकी का स्वयं नियोजित कार्यक्रम है।*
- *कृषि वानिकी– किसानों को मुफ्त बीज व छोटे छोटे पौधे देकर अपने खेतों में वृक्षारोपण हेतु प्रोत्साहित करना। कृषि वानिकी का अर्थ है कृषि योग्य तथा बंजर भूमि पर पेड और फसलें एक साथ लगाना इसका अर्थ है कि वानिकी और खेती एक साथ करना, जिससे खाद्यान्न, चारा, ईंधन, इमारती लकडी और फलों का उत्पादन एक साथ किया जाए।*
- *फार्म वानिकी– फार्म वानिकी के अन्तर्गत कृषक अपने खेतों में व्यापारिक महत्व या दूसरे पेड लगाते हैं। वन विभाग इसके लिए मध्यम और छोटे किसानों को निशुल्क छोटे बीज और पौधे उपलब्ध कराते हैं। इस योजना के अंतर्गत कई तरह की भूमि जैसे– चारगाह, घासस्थल, खेतों की मेंडें घर के पास पडी खाली जमीन और पशुओं के बाडों में पेड लगाये जाते हैं।*

वन संरक्षण हेतु चलाए गए आंदोलन

- *विश्नोई आंदोलन– इसे 15 वीं शताब्दी में संत जम्भोजी द्वारा राजस्थान में शुरू किया गया था संत जम्भाजी से प्रभावित राजस्थान की खिजडी गाँव की अमृता देवी विश्नोई ने अपनी तीन बेटियों सहित वृक्षों को काटने से रोकने के लिए बलिदान दे दिया। इसी क्रम में खिजडी गाँव के 363 लोगों ने अपना बलिदान दे दिया। बाद में महाराज अजीत सिंह ने पेडों को काटने का अपना आदेश वापस कर लिया।*
- *चिपको आंदोलन– इस आंदोलन के प्रणेता श्री चण्डी प्रसाद भट्ट हैं। आंदोलन की शुरुआत सन् 1973 में तत्कालीन उत्तर प्रदेश और वर्तमान उत्तराखण्ड के चामोली जिला के गोपेश्वर नामक स्थान से हुई इसमें आंदोलनकर्ता पेडों से चिपक कर उन्हें काटने से बचाते थे। श्री सुन्दरलाल बहुगुणा चिपको आंदोलन के प्रणेता थे।*
- *जंगल बचाओ आंदोलन– A Greed game political populism की संज्ञा से अभिहित जंगल बचाओ आंदोलन 1980 में वर्तमान झारखण्ड अथार्त तब बिहार एवं उडीसा से प्रारंभ किया गया। जब इस क्षेत्र में सरकार ने प्राकृतिक साल के वृक्ष काटकर उनके स्थान पर कीमती सागौन के वृक्षों के रोपण की योजना बनाई तो सिंहभूमी के क्षेत्र के आदिवासियों ने जंगल बचाओ आंदोलन की शुरुआत की।*
- *मैती आंदोलन– सन्1994 में कल्याण सिंह रावत ने उत्तराखण्ड के निर्वनीकृत पहाडों को पुनः हराभरा करने के लिए मैती आंदोलन चलाया यह आंदोलन उत्तराखण्ड की महिलाओं पर आधारित है। इस आंदोलन में कुवांरी कन्याऐं विवाह की तिथि के दिन किसी निर्धारितस्थान पर पौधा रोपण करती हैं।*

वन और जीवन–

भारत ही नहीं विश्व की असंख्य जनजातीय लोगों के लिए के लिए वन एक आवास, रोजी रोटी और अस्तित्व हैं। ये उन्हें भोजन, फल, खाने योग्य वनस्पति, शहद, पौष्टिक जडें और शिकार हेतु वन्य जानवर प्रदान करते हैं। ये उन्हें घर बनाने का सामान और कल्याणकारी वस्तुएं देते हैं जनजतीय समुदायों के लिए वनों की महत्ता सर्वविदित है। क्योंकि ये उनके जीवन और आर्थिक कियाओंके आधार हैं। जनजातीय जिले देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 33.6 प्रतिशत परन्तु देश का 59.8 प्रतिशत वन आवरण इन्ही जिलों में पाया जाता है।

वन संरक्षण की आवश्यकता–

हमारे शास्त्रों में पेड लगाने को बडा पुण्य कार्य बताया गया है। एक पेड लगाना एक यज्ञ करने के बराबर होता है। वनों के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष अनेकों लाभ हैं।

वन मानव जाति के लिए वरदान हैं। वन प्रकृति का एक सुंदर सृजन हैं। भारत को विशेष रुप से कुछ सुंदर जंगलों का आशीष मिला है जो पक्षियों एवं जानवरों की कई दुर्लभ प्रजातियों के लिए घर है वनों के महत्व को पहचाना जाना चाहिए और सरकार को वनों की कटाई के मुद्दे पर नियंत्रण के लिए उपाय करना चाहिए। पेड लगाने के बराबर संसार में कोई पुण्य कार्य नहीं है। क्योंकि पेडों से अनेक जीवों का उद्धार होता है। दुश्मन को भी वह उतना ही लाभ पहुंचाते हैं। वन पर्यावरण का एक अनिवार्य हिस्सा हैं। हालांकि दुर्भाग्य से मनुष्य विभिन्न प्रकार के उद्देश्य को पूरा करने के लिए पेडों को काट रहा है। जिससे पारिस्थितिक संतुलन बिगड रहा है। पेडों और जंगलों को बचाने की आवश्यकता को और अधिक गंभीरता से लिया जाना चाहिये। इस प्रकार मानव जाति के असतित्व के लिए वन महत्वपूर्ण हैं। वनों से अनेक प्रकार की उपयोगी वस्तुऐं जैसे– इमारती लकडी, जलाऊ लकडी, लकडी का कोयला, प्लाईवुड, बांस, बेंत, लुग्दी, सेल्यूलोज, पशुओं का चारा, गोंद, रबर, लाख, कत्था, अनेक प्रकार की औषधियां वनों से प्राप्त होती हैं। इसलिए मानव को रोगों से प्रदूषण से बचाने के लिए पेडों की संख्या बढानी चाहिये। हमारी सरकार के साथ–साथ हमें भी वनों की सुरक्षा करनी चाहिए और नए वृक्ष लगाने चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दृष्टि पब्लिकेशन '' भारत एवं विश्व का भूगोल'' 2020, 641, प्रथम तल, डॉ मुखर्जी नगर दिल्ली।
2. शिव कुमार ओझा '' पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण'' 2019–20, बौद्धिक प्रकाशन, श्रीराम भवन, देवनगर प्रतिष्ठान पुरी, प्रयागराज (उ.प्र.)।
3. सी.एल. खन्ना ''यूनीफाइड भूगोल'' शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, खजूरी बाजार, इन्दौर।
4. लूसेंट पब्लिकेशन ''भारत का भूगोल'' 2015, न्यू बाइपास रोड अशोकचक पटना (बिहार)।
5. शिव कुमार ओझा '' भारत का भूगोल'' 2020, बौद्धिक प्रकाशन, श्रीराम भवन, देवनगर प्रतिष्ठान पुरी, प्रयागराज (उ.प्र.)।
6. प्रतियोगिता दर्पण अतिरिक्तांक ''भारत एवं विश्व भूगोल'' 2008, उपकार प्रकाशन आगरा (उ.प्र.)।
7. ज्ञान चंद यादव '' ज्ञान भूगोल'' (भारत एवं विश्व) 2017,ज्ञान पब्लिशिंग हाउस।